भूकंपरोधी बांध आज की जरूरत

आईआईटी में साइसमिक डिजाइन आफ कांकरीट ग्रेविटी डैंस पर कार्यक्रम

कानपुर। मंगलवार से आईआईटी में 'साइसमिक डिजाइन आफ कांकरीट ग्रेविटी डैम्स' विषय पर तीन दिवसीय कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम नेशनल इंफारमेंशन सेंटर आफ अर्थक्वाक इंजीनियरिंग (एनआईसीईई) ने संचालित किया है।

कार्यशाला के पहले दिन 'अर्थक्वाक एनालिसिस आफ सिंपल सिस्टम' विषय पर बोल रहे प्रोफेसर एके चोपड़ा (कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय) ने कहा कि कांकरीट के कमजोर बांध को कम से कम लागत में भूकंप रोधी बनाने की तकनीकी पर काम किया जा रहा है। संस्थान के सहयोग से कई संभावनाओं पर नई तकनीकी निकाली जा रही है। प्रोफेसर चोपड़ा ने कहा कि बांधों की सुरक्षा का काम देश में कोयना बांध की तबाही (1967) के बाद से चल रहा है। देश और विदेशों में भी ऐसी तकनीकी और डिजाइन इजाद की जा रही है जिसमें बांध भूकंपीय खतरों से लड़ सके और जान-माल का खतरा कम से कम हो। देश में अधिकांश कांकरीट बांध भूकंप के बड़े झटके सहने लायकनहीं हैं। कार्यशाला के बाद छात्रों ने साइसमिक डिजाइन और मेथोडोलॉजी से संबंधित कई सवाल किए।

कार्यक्रम में बोलते प्रो एके चोपड़ा।

6 मार्च तक चलने वाली इस कार्यशाला का उद्घाटन विभाग के हेड ओंकारनाथ दीक्षित ने किया। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में संस्थान के सुधीर कुमार जैन ने बताया कि कार्यशाला में 150 छात्रों और फैकल्टी ने हिस्सा लिया है। कार्यक्रम में सुधीर कुमार जैन समेत पूरी फैकल्टी मौजूद थी।

अमर उजाला 1.4/3/09

आईआईटी के आउटरिच कैंपस में आयोजित कार्यक्रम में आए इंजीनियर्स और छात्र।